❀ सर्वेश्वरी श्री चारुशीलाजू की जय ❀

श्रीकरुणा-मणिमाला

❀ प्रारम्भ ❀

रचनाकार

श्रीमद्योगानन्द वंशावतंस श्रीहरिहर दास शरण चंचरीक

श्री रास रसिक शरण जी महाराज

प्रकाशक

श्रीकरुणा सिन्धुजी महाराज के वर्त्तमान सेवक

महान्त श्रीलक्ष्मण शरणजी महाराज

श्री चारुशीला बाग श्री जानकी घाट-

श्री अयोध्या जी

प्र० सं०] सं० २०१० [१०००

शुद्ध वैशाख शुक्ल चतुर्दशी बुध

भूमिका

परम रसिकाधिराज अनंत श्री स्वामी श्री करुणा सिन्धु जी महाराज का चरित्र मय यह ग्रंथ रत्न आज तक छिपा हुआ था यह महाराज की आज्ञा पालन की गई है। यों तो गुप्तरूप से जन्मोत्सव अति वर्ष हुआ ही करता है और हुआ ही करेगा। कलि किरण से संतप्त हृदय वाले महात्माओं की विनीततर प्रार्थना से श्री चरित्र नायक जू की आज्ञा प्राप्त कर ग्रंथ रत्न का प्रकाशन हो रहा है। अतः निर्मल प्रकाश में बिचरने वाले रसिक प्रेमी जनों को चाहिये कि मणिमाल-प्रकाश में रहकर अज्ञानता रूप अन्धकार के दुःखों से बचें अर्थात् नित्यशः चरित्र अध्ययन मनन आदि द्वारा हार्दिक आनंद को प्राप्त करें।

शुभचिंतक—प्रकाशक
श्री चारुशीला बाग।

समर्पण

अनन्त श्री स्वामी श्री रामसेवक शरण जू
महाराज की आज्ञा से इस ग्रंथ रत्न
का प्राकट्य हुआ है अतः श्री
महाराज के ही श्री कर
कमलों में सादर
समर्पण
करता
हूँ

प्रकाशक—
श्री चारुशीला बाग,

श्री करुणा मणिमाल की आरती

करु करुणा मणिमाल की आरति मन भाई ॥
सद्गुरु छवि हिय धारिके अँग अँग पुलकाई ॥१०॥
जन्म निकास दुलारनों दर्शन निधि पाई ॥
घुटुरुन सवन सिखावनों रस रास लुभाई ॥१॥
अति उदार चाकरी दयाहरि-छवि हिय लाई ॥
पवनतनय की कृपा अवध पुर तन फला पाई ॥२॥
गमन ग्रंथ समुझावनों सन्तन सुखदाई ॥
जनक पुरी गम, जन सुधार, रस भेद बताई ॥३॥
चित्रकूट जयमाल चरित मानस छवि छाई ॥
युगुल प्रिया श्री रसिक अली प्रिय प्रीति सुहाई ॥४॥
सरित वास कुसुमावली गुनि अतुल मिताई ॥
चरित सिन्धु मजि "रसिक" सदा जीवन ललिताई ॥५॥

॥ श्रीकरुणा सिन्धवे नमः ॥

(१)

॥ दोहा ॥

प्रीतम प्यारी पद परसि , चारु शिला उर धारि ॥
अग्रअली पद रज लपटि , कविता करउं बिचारि ॥
सन्त सुखद रसिकेन्द्र के चरित पयोधि अपार ॥
रसिक सन्त अनुगत दया , जांउँ सुनिश्चय पार ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

शुभ ग्राम गोपाल पुरी १धतुरा द्विज जानकिवर बड़ ज्ञानन में ।
लहि शास्त्रसुज्ञान गही सतसंग रनिमज्जि सदाशिव ३साजनमें ।
गृह दम्पति जीवन मातु पिता ऋण मुक्त हरीजन भावन में ।
बनत मग्न सुसम्पति ४लाय भिखारि बनेपूरघु ज्यों निज यागनमें
लहि के ६त्वरदान उपाय यथा विधि ७मानस यज्ञ सुप्रीति कियो
फल आशिष गर्भ सुशोभित मातु चतुर्दश मास बिताय दियो ।
दिन चारि चतुर्दशि शुक्ल सुमाधव मास स्वपन्न सवे ८अनया ।
सब लोग सुखद ९शशीकरहद्द उजग्गर वंश सुपुत्र जयो ॥ ४ ॥
सबह सै तीश सुविक्रम अब्द सुभाय भयो तिहुँ लोक जसी ।

१—धतुरा के तिवारी । २—गंगा जी में । ३—पूजन ४—लगाय करके । ५—महाराजा रघु जैसे-भाव यह कि यज्ञमें सब धन लगा देनेके बाद भी वरतन्तुजी के शिष्य कौत्स आदि ऋषियों के लिये दानी बनेही रह गये और बीरतासे दान दिये । ६—जमात वाले महात्मा से । ७—तुलसीकृत मानस रामायण का अनुष्ठान । ८—अनुकूल होकर आ पहुँचा । ९—चन्द्रमा का पूर्ण किरण ।

शशिपूर्णकला १नखतेजपला २पद अंगुठ वाम सुआनि वसी ।
मुद मंगल मातु पिता मन मोद अपार पुरी परिजन्न लसी ।
तिहुँ लोकन ते रसकेलि शिंगार बिहाय संभार ठठाय हंसी ॥५
कुल पण्डित देवानन्द सुजातक कर्म कराय सुभाशिष दै ।
३ज तक फल भाषि पगे मन मोद रंगे दम्पति निछावरि ले ।
सबरे द्विज नेगिन याचक गे निज नेउछि पाय करी जै जै ।
छठि कर्म सुनाम करन्न लिखी श्रीराम प्रसन्न तिवारिन मै ॥ ६॥
जननी श्रीपद्म पला सुत हेतु रची सुविधान गृहागन में ।
परिवार की नारि बुलाय के गावति मंगल गान सुरागन में ।
कुल देबिहिं पूजि सुभोग लभाय सुताय लला निज पालन में ।
जल देन में आँगन शब्द ४भने सुनि औचकि दौड़ ललायन में ।
शशि कोटिन तेज पलंग निहारि अचेत गिरी ते उठाय लई ।
करि चेतन पूछि कही बर वृत्त सुज्ञान कराय दे दृष्टि दई ।
भ्रम मोर स्वपन्न लखी महरानिहि कोप कुदृष्टिहि काहु भई ।
द्विज आय बुझाय कहे बड़ि भोलि हो सन्तकृपा किहै झांकि नई॥
कुलदेव कृपा कुलदेबि कृपा द्विज सन्त गुरुजन आशिष ते ।
निज जाति जनन परिजन पुरजन सुखदानि मनोहर भे सबके ।
५तेइ सन्तन आय निहारि सुलच्छन ठग्गि रहे हिय शोचत भे।

शुभ त्याग की ज्ञान विराग कि मूरति या शशि ज्योतिकि मूरति ये ॥ ६ ॥ अवलोकत गद्गदकंठ तनोरुह ईश कि जय जय कार भयो ॥ तुलसी दल फूल को ६मानस ग्रन्थ निछावरि हाथ धराय दयो ॥ बहु वाल बिभूषण वाल खेलोन निकाशन भेंट उठाय

१—नखरूप चंद्र के तेज से उत्पन्न। २—श्रीकिशोरी जू का। ३—जन्म समय का फल। ४—घर से भाग कर आँगन से देवी बोली। ५—पहली जमात वाले। ६—तुलसी कृत रामायण का हस्तलिखित गुटका।

स्वयो । निउछावरि नेग १चुकाय सबे हरषाय शुभाशिष पाय गयो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

कहुं पलना कहुं गोद में, दूध पियावति मात ॥
चरण हाथ मुख चूमती, तेल लगावति गात ॥ ११ ॥
मज्जि मन्द हँसि झींगुली, कंगही केश सुधारि ।
भरल दिठोना अंजि दृग, चूमति हृदय उघारि ॥ १२ ॥

इति श्री रास रसिक शरण बिरचिते श्री करुणामणिमाला ग्रन्थे प्रथमोङ्कः समाप्तः ॥१॥

॥ सोरठा ॥

गर्भ २स्वप्न की वात, गाय दुलारति पालनो ।
अभिलाषा मनजात घुटरु आदि मन भावनी ।
रघुवर बाल विनोद, अनरस पद आवेश में ॥
जननि हृदय नहिं मोद, सबके सब व्याकुल भये ॥ २ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आदू टोना झारिझारि गुणीजन थाके सब बड़ी ओजी ३दूधा धारा सन्तदक आयो हैं । दशाते प्रसन्न प्रातकाल बड़ बृत्त पूछि जानी हँसि सत्य उपखान को मँगायो है ॥ वशिष्ठ समान नरसिंह मन्त्र पाठ करि कुशन ने झारि वात वेगि किलकायो हैं । कातर नयन जननिहि लखि दृध पायो, सन्त शुक सनक नारद ४जस भायो हैं ॥२॥सुढ़र सुगोर गात शरद शशी की यत भ्रमर समूह मकरन्क मुख प्यासे हैं

१—श्रीजानकी वर तिवारी जू । २—स्वप्न का विस्तार श्रीकरुणा सागर में है । ३—अकेले पयाहारीजी महाराज ४—जैसे ।

मख दुर दुर आँजे भाल पे दिठोना भ्राजे श्रुतिफूल फूल नक-बुलक हुलासे हैं ॥ किलकि जननि गोद कबहुं जनक गोद १साधु पद परसि खेलन मति भासेहैं। मानस सुग्रन्थ देखि सन्त मुख-कंज पेखि जननि अंचल छिपि पय अभिलासे हैं ॥ ४॥ हस्तरेख भाषे नेग मालिका सुमन राखे कंठ मेलि पुनि वाल माल पहिरा-ईहै । रात २पान मगन ३उछार किलकत ठोकिचुचुकारी देतनहि नींद हंसि आई है ॥ लीला को विराम निज जननि अरामदई पुनि पलनहिं झूलि नूपुर बजाई है । बाल बोल अर्थ बिनु सुनि मन मोद मातु अंगन भूषण सब नेग में लुटाई है ॥५॥ बैठत खेलोना मुखमेलि फेंकि छोड़ि देत आन देखि डरि लौटि जननि घिसकते । पय पान करि दृग फेरि निरभय होत सन्त हित ४भोग को दुभाग करि मथते ॥ जननि पूचेताई अनजान नर बोलिलाई विप्र कर जोरि कही वृत घबरावते । सन्त मन शांचि माँग, पाई है सुस्वाद और जन्म जन्म नित ईशयहि भाँ-ात याचते ॥६॥ घुटुरुन आँगन खेलन छाया नर देखि चूमिचूमि पकड़ि किलकि रूठि भागते । सुधि दूध पान की रुदन अम्मा अम्मा कहि अंचल की आड़ में सन्तोष धन पावते ॥ कबहुं दनिशीथ घुटुरुन ते उतरि सेज लोटा वो गिलास लै बजा य खूब नाचते । जननि चादर खींचि घुंघुट बनाय नाँचि नीद को दुराय किलकाय के हंसावते ॥७॥ आओ मेरे लाल बाबू भैया बच्चा रात बड़ी सोवो नातो बाहर ते हौआ लेइ भागेगो आँगन सखान भीर जागो जागो ७मेन ८कीर अबहिं नहींतो सब बेगिभागि जा वेगो ॥ तेल को लगाउं दूधपान को कराऊं

१—पयोहारीजी के। २—दूध। ३—हाथ और पैर का उछारना। ४—तैयारी राजभोग को। ५—पुनः चूल्हा को। ६—आधी रात में। ७—मैना। ८—शुक।

मुख कर पद चूमि मेरो हिय हुलसावेगो। अंगुली धराय अंगना में ताता थैया करि चुटकी बजाय १अनधन सुख पावेगो ॥८॥ चैत राम जनम अवध राम घाट पर मुंडन कराय बहु बिप्रन जेंवाए हैं। दान मान दक्षिना पुजाय मनकाम सब मन्दिर-दरश हनुमन्त ढिग आए हैं॥ बालक २चढ़ाय, सब सन्तन दरश-सुख पाय, घर आय जाति भोजन कराये हैं। सखन समेत बहु बालक बिनोद करि ३नगर में चहुँ दिशि मोद बर षाये हैं। ॥ ९ ॥ सखिन बनाय रास मंडल रचाय नाच गावन सिखाय ताली दै दै के नचाते हैं। कहूं बिच नाचैं एक एक गलवांही दिन्हे देखि देखि लोग हँसि हँसि गिरि जाते हैं॥ रुठन मनावन बिचित्र हाव भाव करि, युगल बिलाड़ पानि छींटि के लड़ाते हैं। देखि लोग आपस में बात करैं होनिहार ब्राह्मण कुमार ये सकल हरषाते हैं ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

होत मगन मन खेल, उठि चुप दौड़ि सखान घर॥
प्रात कलेवा ४केल, जननि मुदित खोजन चलीं ॥११॥
सखहिं उठाय के दीन्ह, दूध भात इत उत निरखि॥
गुण उदार गहि लीन्ह, जन्म सिद्ध अधिकार यह ॥१२॥

इति श्रीरासरसिक शरण विरचिते श्रीकरुणामणिमाला ग्रन्थे
द्वितीयोऽङ्कः समाप्तः ॥२॥

—❀—

१—तुलना रहित। २—हनुमानजी के चौकठ पर। ३—गोपालापुर में। ४—के लिये।

दोहा

प्यासे हित कूआं १परे, सोये सुन्दुक आर ॥
नींद बहुत प्रिय लागती, माता सुख न सँभार ॥१॥
मुनियां हठ करिके लई, भोजन पान अघाय ॥
छोड़वाई जय हार गहि, दीन्हो तुरत हटाय ॥२॥

सवैया

चकडोरि कहूँ चकई कहुं कन्दुक खेल सखान जिताय हँसे ।
फुलबाग सखान शिंगार पियापिय आँखिन भाव लतान लसे ॥
सखि साज दुहूँ दिशि राज पुरस्थ निमेष बिहाय महान रसे ।
मलिया नित देखि विहार अलौकिक मोद महा मिथिलामें बसे।३
इक एक चरित्र महान बिलच्छन सर्व सुखद शशीकर से ।
उपवीत सुभोजन विप्र सजातिय मित्र कुटुम्ब पुरीजन के ॥
निज सन्त निवास गहे व्रतचर्य २श्रुतादि पढ़े ३कुलपूजन ते ।
बड़ सन्त समागम सेवन मातु पिता ऋण मुक्त भये हरषे । ४ ।
अजमोद कुमारि बिलासिनि के संग मारग शुक्ल विवाह भयो ।
तिथि पंचमि राम विवाह उछाह महान प्रमोद समस्त हियो ॥
इत भाँवरि आगे कहूं कहुं पाछे सुश्याम प्रभा दरशाय दयो ।
जनु आजुहिं ब्याह भयो पिय के संग आनन्द वारि प्रवाह जयो
॥ ५ ॥ सब ४मित्र थके डिंगौस रईस रियासत वेति सुभद्री के ।
अनुनय नृप काला कांकर के स्वीकार नहीं उपरोहिति के ॥
हठके वश वैरीशाल मनाय सुकोष हिसाब सँभारन के ।
बहु ५साज समाज ते आय बसे नृप राजपुरी मधि भागन के ॥६

१—गिर गये । २—वेद आदि । ३—देवानन्द जी से ।
४—आर्थिक दशा देख कर और उपाय बतला कर ।
५—स्वागत और उत्सव से ।

सब १स्वप्न की बात बनी तबते दुखदूर सुखी सब लोग भये।
नित पाठ प्रसिद्ध कथान सुनैं नृप सन्त चकोरन साथ लये॥
निज प्रश्न निरुत्तर मग्न महासुख जोरि दोऊ कर भाव चये।
ब्रह्मषि सुसंगति पाय के स्वार्थ भयो परमार्थ निजागम ये॥७॥
अपराध न मानव दासन के नित अमृत बृष्टि प्रदान रहै।
करुणा भरि दृष्टि लखी हंसि के सब जानि के बास हमारो अहै॥ पर रच्छनभावउपाय बड़ो नृप चित्त बिधान करोइ लहै
कुल२दीप फरूक्कहिंवाद रचैं नित रामचरित्र सुभाव गहै॥ ८॥
बुलवाय सुआयसु पाय सिधार सती रुचि शंकर पाठ कियो।
सति मोहप्रसंग बुधो तन त्यागि अजेश सदाशिव मानि लियो॥
मुख पंकज औरहिं भांति प्रकाश निहारि सभी जन छांड़ि दियो
पुज३वाय प्रसंग शिंगार उतारि तहूँ सुधि नाहिन रातिधियो॥९॥
कहुं उज्ज्वल श्याम प्रकाश लखात नभस्थल शब्द बिलच्छनता
झनकार विभूषण वीण मृदंग सुनर्तन हीय की भावुकता॥
वल्मीक सुमानस यज्ञ महोदधि पार प्रजा गण चातुरता॥
शुभ आशिषदान कराय सबे भये आपु विमुक्त ऋणी ऋणता॥ १०॥

॥ दोहा॥

सिय विचार उर धारि४ के, कोष काज करि धाय॥
पवन तनय श्रुति मन्त्र ते विकल चेतना पाय॥ ११॥
गृह गृह द्वार दलान में, खोजत मत्त समान॥
कछुक काल धरि धीर उर, कोष काज सुधि यान॥ १२॥

१—केतु उदय का जो अनर्थ बढ़ रहा था वह शान्त होने लगा
२—ब्राह्मण का नाम है। ३—समाप्त करके ४—रामभद्रजी

इति श्रीरास रसिक शरण विरचते श्रीकरुणा मणिमाला ग्रन्थे तृतीयोऽङ्कः समाप्त ॥३॥

॥ सोरठा ॥

आजु व्यग्रता देख, रखवारे पूछन लगे ॥ समाचार सुनि शेत्र जमादार पुनि बोल ये । १॥ खोल खजाना गेह, काज हस्त लिपि देखिके ॥ धिक्कारे निज देह, प्रभु करूणामन महँ सुमिर । २॥

॥ घनाक्षरी ॥

इस्तफा को लिखि जमादार हाथ भेजी द्वार व्याकुल नगर बात फैली राम वन ज्यों । छोटे छोटे वालक विलोकैं पितु भावना ते युवा नरनारी भ्रात, वृद्ध सुत भाव लयों ॥ वेद१ विप्र, धर्म२राज धनद३ वणिक जन, दया अवतार शूद चार भाग भाव म्यों । नृप परिवार युत जीवन अधार जानि हिय में बिचारैं खरैं ऐसो दिन आय क्यों ॥३॥ बिनय बिनम्र सदभावनाते बीती रात दूजो दिन भोजन, ४ अधेरी रात आई है । पाठ बजरंग बाण आयसु तुरत पायो इत उत सोयो देखि अवसर पाई है ॥ उत्तर दिशा की ओरबन बिनु मारग के बाग वो वगीचा खेत मृदु मन भाई है । दीनता को गाई सई पार में नहाई चले बड़ोई प्रभाव प्रसन्त दरश दिखाई है ॥४॥ लहेउ असीष, भूले मारग न सही ये है चौथे दिन मध्य अवधेश धाम जावोगे । पतित पुनीता ही के बीच में निवास मेरो महाराज मोदक के नाम ही से पावोगे ॥६गोमती गजारिगजमोक्षवो भरतकुण्ड पुरी छबि देखि रविधाम बिरमावोगे । आगे आगे चलो पीछे बेगही से मोहूँ ऐ हों मेरो ई बतायो ठामसुख सरसावोगे ॥५॥ ७सुनि के प्रभाव

१— वेदावतार करके । २— धर्मावतार करके । ३— कुवेरावतार करके । ४—आधीरात । ५—श्री हनुमान जी । ६—ये सब तीर्थ है । ७सूर्य भगवान के द्वारा अयोध्या का महत्व ।

निशि,भोर १संग २रामसरि रामघाट धवल हलोर जल पायो हैं। हिय ३सुप्रकाश,सरि महिम प्रतच्छ लखि रज लोटि हिय सुख अकथ सुछायो हैं॥ कहुँ कहुँ हवन पुराण पाठ रामायण भागवत बालमीक बिनय सुहायो हैं। नाम की रटन कहुँ भजन पूजन कहुँ दरसि परसि हनुमान ढिग आयो हैं॥ सात फेरी परिपरिक्ष घूमि के प्रणाम करि बिनय विधान बहुबिधि हाथ जोर के। महाराज मोदक को खोजि थाकि सीढ़ी पर दीनता विचारि के उदास हिय ओर ते॥४॥ भावना में प्रेरणा कराय५ रघु नाथ भेजो कान में सुनाम हनुमान कही थोर से। गुरु बताय गयोपायो परिचय वेग करि सुप्रणाम संग लायो कृपा कोर ते॥७॥ प्रेम अश्रु अर्घ प्रदान गुरुदेव हित, चारुशीला करुणाधिकारीमन जाने हैं। शिष्यन बोलाय वस्त्र मण्डप रचाय केला वन्दन सजाय सब आवरण माने हैं॥ गौतमीय तन्त्र यन्त्र मध्य धनुधारी पूजि मुद्रा चारुशीला जू की पूजि सुखसाने हैं। पूजा विधि पूजन बनाय दीनबन्धु गुरु रघुनाथ शिष्य द्वारा वेगि बुलवाने हैं॥८॥ फेरी चार मण्डप करायो विठवायो मधि सकुचत नव वधू भाव उर आने हैं। पंच गव्य अमृत मंगल अभिषेक शुध, ६अंचला श्री विन्दु युग कंठी पहराने हैं॥ वोवायन जस७ रघुनाथ जी प्रसाद द्वारा मंत्र शरणागती रहस्य दिलवाने हैं। सविधान भाव रसराज दीनबन्धु गुरु ८ध्याय वहि रतर सुनाम समुझाने हैं॥९॥ शत्रुजित जनक जननि शशि कीरति जू रस के अचारज

१— यात्रियों के साथ। २— सरयू जी। ३— कृपा का। ४— दण्डवती परि क्रमा। ५—चारुशीलारूप से हनुमानजी। ६—चन्द्रिका-मुद्रिका-रामनाम-धनुष बाण ये चार संस्कारछोटे पनके थे अतः शेष संस्कार दिये। ७—जैसे। ८—ध्यानकरके।

बहिन चारुशीला हैं। मिथिला जनम सिय सखिन प्रधान एक रस केलि अष्टयाम संग अतिशीला है॥ निष्ठा नाम रूप धाम त्याग विजातीय संग रसिक सजातीय के संग अतिमीला है। पुरुब१ जनम बाहिरंग सनबन्ध आदि तनमन बचन ते आजुहीं ते काला है॥१०॥

॥ सोरठा ॥

कहि समुझाय प्रमाण, महिमा कंठी तिलक को॥ युगल गुरुनि सनमान२, पादोदक मुख शिर धयो॥११॥ कुसुमन माल प्रसाद, उठवत आपुहिं ३गिरि परेउ॥ सदगुरु रामप्रसाद, लै उठाय पहिरायऊ॥१२॥

इति श्रीराम रसिक शरण विरचिते श्रीकरुणा मणिमाला ग्रन्थे चतुर्थ ऽङ्कः समाप्त ॥४॥

॥ दोहा ॥

काला काँकर भूप बड़, खोजि सहित परिवार॥ आय भरत जिमि शिष्य मे, सत संगति भव पार॥१॥

बारह सै को आमदनि, बरियाँवा में दीन्ह॥ साढ़े तनि सै बिगहा, वैरागी पुर कीन्ह॥२॥

॥ सवैया ॥

परिवार गोपाल पुरी कर आय, लखे सिथ४ भोजन लौट गये। भे शिष्य भुवाल ढ़िड़ौस एकाँन बिघा फतुहा पुर माफ दये। नृप वेति एकांन विघाहि वसन्त पुरी पद पूजि के शिष्य भये। एकान विघा नृप भद्रि चढ़ाय श्रीरामपुरी तेहि नाम धये॥३॥ सर्वेश्वरि आय ५कही वड़ वैन यहीअलि अग्र रसारज हैं। जिन

१— गृहस्थाश्रम का। २— साष्टांग प्रणाम आदि द्वारा। ३—धनुषधारी जी के गला से। ४—महात्माकी प्रसादी। ५—भावना में।

ग्रन्थ रची तिन भाव छिपो अवतार लई; तेहि कारज हैं ॥ बहु ग्रन्थन भाव विगाड़ि छिपाइ बिनाशि दियो जो अनारज हैं। इन्ह वेगिहिं भेजि बचावो भला प्रिय दम्पति के लि कलारज हैं। ४॥ सद ग्रन्थन देखन चाह भई, गुरु राम प्रसाद कही तबहीं ॥ अवलोकहुजाय रेवासा महँ रसराज के ग्रन्थ जिते सबहीं ॥ मम आयसु ग्रन्थ प्रचार करो रसभाव सुखोलि नहीं १दबही। रस भाव उपासक भूप शिरोमणिता जग मांझ लहो जबहीं ॥ ५ ॥ लै आयसु जाय२रमापति वाग टिके, विनुपूछ, ३फलाशि भये। इक मासके बाद ४हरी कर कोप अनर्थ शमाय सुपूजिगये ॥ रस अर्थ अनर्थ करो नहि आजु ते बद्ध प्रसुबाणि भये सबये। सब ग्रन्थ सुअर्थ पढ़ाय रहे दुइ वर्ष तहाँ छिपि भाव नये ॥ ६ ॥ गल ता मधि श्रीश्रिय चारज स्वप्न लखे शशि कोटिप्रकाश महा। अ लि अग्रके रूप में राजत हैं रस ग्रन्थ रची निज हाथ गहा ॥ श्री चारु शिला रसराज अचारजकी कर कंज ६प्रताप लहा। प्रिय द म्पति सेवन काज निरंतर प्रीति महान प्रवाह वहा ॥ ७ ॥ लखि गालव गादिहिं पूजि परस्पर भाव गम्भीर बिचार जिये। कछु काल ७विलास पयोनिधि में मँजि ८ग्रन्थ सुस्वाद सँभारि हिये ॥ उत रामसखा इतसीयसखी रसकेलि सुधारस पान किये। उर ध्यान जिहा पर नाम ललाम छबी दृग कारज हाथ लिये ॥ ८ ॥ रसराज ९गुरु हनुमंत कृपा युग प्रीतम पंकज की करुणा। मत वादि मतंग १०गजारि बने मरुमालव जीव कियेशरणा ॥ ११नमि- दाल भुवाल १२उखानख के टिड़ि कोप जहान सबे हरणा। सत

१— छिपा हुआ। २— रेवासामें हैं। ३ फलाहरी। ४- हनुमानजीका। ५—प्रतिज्ञाबद्ध। ६—छाया। ७—रासविलास ८—निज रचित। ९—श्रीचारुशीलाजी। १०—सिंह, ११— काश्मीर। १२—उक्खानखां।

संग समान प्रभाव अपार जगत्त पयोनिधि भे तरणा ॥ ९ ॥ कछु देशप्रचार सुधारि करी कछु तीरथ वास बनारस में। १जफरा ढिग राम प्रसाद परहस भे सत्संग २महारस में ॥ छवि देखि ३पुरी नमिके गुरु द्वार परे गुरु पायन कंजस में। कर शीश दिये लटाइ हिये मुद बाढ़ अथोर दुहू दिस में ॥ १० ॥

॥दोहा॥

मधुर कोकिला कंठ ते, ग्रंथ भाव दरशाय।
अमिय अग्र ४रचना वली, सुनत हृदय सरसाय ॥११॥
दीनबंधु गद्गद भये' तनरुह अति फहराय ॥
जयति अग्र जय केलिकर, धनुषधारि रघुराय ॥१२॥

इति श्रीरासरसिक शरण विरचिते श्री करुणा मणिमाला ग्रंथे पंचमोऽङ्कः समाप्तः ॥५॥

॥सोरठा॥

संत चकोर समान, केलि कथा शशिकर निकर ॥ करत निरन्तर पान, दीनबन्धु सदगुरु दया ॥ १ ॥ नित करुणा उमड़ात, नव नव केलि कथान में, शूलहुँ हिय भरि जात, करुणासिन्धु सु-नाम तेहि ॥ २ ॥

१-जफरावाद। २-शृंगार रसमें। ३-अयोध्याजी। ४— कवित-अग्रसागर, अग्ररस मंजूष, अग्रसुचंद्रिका। अग्रारासबिलास, कौमुदि, अग्रयूथ विनोदिका। अग्रसुषमा, अग्रमंजरि, अग्रसेवा, वो शतक, अग्रचालीसा, बहार, पियूष अग्र बड़ा खड़क। अग्र रसकी कुंजिका, परिशीलनी, वो दि-भासिका। अग्र गीत, तरंग, दर्शन, पदक, अग्रकलापिका। मार तंड, प्रदीप, तन्त्री, कुसुम, दर्पण, अंजना अग्ररससारी, महोत्सव, परिणयम्न, विवेकना। ध्यानदासजीकृत संगीत बिवे-चन में है। औरभी कुन्डलिया, रहस्य त्रय आदि ग्रंथ हैं।

॥ घनाक्षरी ॥

युगल प्रसादी माल चारुशीला ध्यानकाल विपिनप्रमोद बास कथा सबकही हैं । गुरु दीनबन्धु हि१ विचारि सब संत संग जानकी सुघाट चारुशीला वाग लही हैं ॥ झोपड़ी रचाय ठहराय आठसाधु संग आयसुअशीष दै फिरत पद गहीहैं । धनु धारी दशरसअमिय गुरुदेव पद सुसंग कलाप केलि कथा काल सही हैं ॥ ३ ॥ जानकी प्रकाश चेला, गमन जनकपुर-बड़े महा राज संग संत समुदाईहैं । मारग प्रसंग अष्टयाम पूजा २आदि ग्रंथ आठ सुवनाय जन मन अतिभाई हैं ॥ वहुत विरागी ३अनु रागी चेला सधक भे मतवादी मत्त मनतोष वड़ पाई हैं । मिथि लाहुं लखी लालि सहचरि आगमन आवरण सहित अधिक छवि छाई हैं ॥ ४ ॥ अवध निवास, सतसंग, रामसखे आयो तीरथ भरमि कृपा के निवास आयो हैं । नित नित नव पद रचि हरिहर युत विविध विधान ४केलि । सुख सरसायो हैं ॥ राम दासी वाई रस मालिका शरण पाई वल्दूदास आदि पांच भतिज ५सुहायो हैं । जानकी चरण कंज चेला राज राघो दास ६दक्षि-णा अरथ नव रतन बनायो हैं ॥ ५ ॥ सोई राम प्रसाद परम हँस आय बसे जानकी प्रपन्न पदकंज शरणायो हैं । चेलाराम दयालु शरण भे, शरण सियाराम, दास वैष्णव दुसाधक कहायो हैं ॥ सियादास महन्थ माखन दास अधिकारी आये राम रतन शरण पद पायो हैं । बारह बरष सतसंगमें लुभाय रहे कृपा के निवास मिथिला में बसों जायो हैं ॥ ६ ॥ दास

१-हृदयमें । २-शत पंचारिका । दृष्टान्तवोधिनी । तीर्थयात्रा । राम सहस्र नाम । अलंकार । अमृतखण्ड । सीताराम चरण चिन्ह । ३-गृहस्थ । ४-गायन सत्संग द्वारा । ५-भावनामें दृढ़ कराये गए । ६-आचारीजीका चरित्र रसिक व०भ०मा० में है ।

राम गुलाम पुजारी आये रामसखे प्रेमाशीष पाय चित्रकूट अनुरागे हैं। सन्त नाम युगल एकाह्न विधि अष्टयाम विपिन प्रमोद सरि तीर मुद पागे हैं ॥ चेला सिया बलनम सरण भये चित्रनिधि आठ शिष्य युत रसिकेन्द्र संग लागे हैं। भये रामशरण युगल पदकंज भृंग मानस नवाह२ पाठ सहस उद्यागे हैं ॥ ७ ॥ शीलनिधि संग चार चेलन पधारे सुख उर न समारे नित नव सुनिवास के। लक्ष्मन शरण चेला बड़े ही विरागी भये मानस उपासना में रंगे हिय आस के। पंडित महान सतसंग के विलासी उमादत्त जूतिवारी आये छाँड़ि विंधवास के। स्वामी राम सेवकशरणजू चरण आये आयसु अशीष चेला जानकी प्रकास के ॥ ८ ॥ कनक भवन दरशन में उदासी छायो देखो आँखि मूदि सिय स्वामिनी दयालुता। चारु शीला प्रेरि के कहायो राज राघो दास जावो द्वार बाहर ले आवो प्रेमाकुलता ॥ दरश करायो हिय बहुत दृढ़ायो लायो जानकी नगर राज राघो की अधीनता। रसिक विराग अनुरूप उपदेश पायो रसिक अली भो नाम प्रति उपासानता ॥९ ॥ रस३ भेद अरु अगमचय भेद ज्ञान अनुभाव बिभाव संचारी गति कही है। अस्थायी संयोग विप्र लम्भन शिंगार भेद हास्य आदि रस भेद रूप कही सही है ॥ भाव भेद रसाभास भावाभास सब्र माण रस अरु भाव अप्रधानता को गही है। रस सङ्करण सरूप निरूपण करि गुण वृत्ति रीति आदि कथा निरवही है ॥१०

॥ सोरठा ॥

मणिमय बिबिध प्रकार, कुंज कुंज आवरण सब ॥
बन उपवन छवि धार, अवध छटा छहराऊ ॥११॥

१-महाराज के शिर दर्द निवारण के लिये। २-ज्वर निवारण के लिये। ३-इन सबोंका पूरा वर्णन श्री अग्र सारंड में है।

कथा प्रदर्शन काल, संत सकल दर्शन कियो ॥
मानसमंजु मराल, चहत नही अनजान जल ॥१२॥
इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणामणि माला ग्रंथे षष्ठोऽङ्कः समाप्तः ॥६॥

॥दोहा॥

सब अवतार उदार तहं, १२मेउ रास रस आय।
वन बसि जानाक रसिक जू, सन्त सुखद छबि छाय ॥१॥
माँगि मधुकरी लाई के, दीन्हो गुरुहि पवाय ॥ चरित सिन्धु सियनाह के कविहिय महं न समाय ॥२॥

॥ सवैया ॥

जन२माल कथान पुराण प्रमाण ३सुआगमतें अनुवाद कियो। कहु वैदिक मन्त्र ते तूलनमें चरितांग शिंगार लखाय दियो ॥ ४वसु भ्रात ते प्रेम सुसागर आय सुभक्तक था सुख पायो हियो। सुकृती सब जन्म बटोरि के आजुहिं ऐसो समाज में आय उयो ५लखनव्व पती सुनि राज सभा पद देखि प्रभाव हिये हुँलस्यो। मीरा पुर देरा विवी ढ़ेमा चकियादि है रोम रुमा पुलक्यो ॥ वां सीपति ६जानि प्रभाव करी सेवन पद कंज धिया सरस्यो। साधक दोउ पवत रामदासहरिदास पढ़ो वृत चेत रम्यो ॥४॥ पति रानु ७उदासि सुसाधक भे सिद्धान्त विहाय उपास पगे ॥ गुरु सेवन रीति करी दृढ़८ भावि सुशिष्य न मोह नकत्त जगे ॥ हरिदास विराग कृपा ते लही सब काल भजन मनन लगे। यहि स्वादहिं जातधिकार भने वसु९ वर्ष वयी१० घरहुँ ते भगे ॥५॥ वनश्याम हरव्वस११ आयसु ते भये साधक राघविदास जु के।

१— संहिला में है। २—भक्तमाल। ३ शास्त्र से। ४—आठ। ५—नवाब। ६—सर्वजित सिंह जी। ७—माधोरामजी। ८—गुरु पूजा के लिये लिख गये। ९—आठ। १०—अवस्था में। ११—हरव्यासी।

सियराम शरण श्रीराम जानकी शिष्य भये दु विलास१ जु के ॥
दोउ साधक जनक लड़ैति शरण बलराम के दास दुलास२ जु
के । सिय नागरि दास सुआयसु साधक रामसेवक शरणासु
जु के ॥६॥ गुरु रामप्रसादके संग अनन्त सुसंत लिये चितकूट३
गये । वनकेलि विहार वो रास विलास प्रतच्छ लखाय सुमाल
दये ॥ रस मालिक ग्रन्थ बने सुनि सन्त भरे मुद प्रेमावेश भये ।
गुरु सेवन काल वियोग४ लहे, सुनि मैहर राम सखे चितये ॥७॥
उडुपी लै जाय दिखाय के ग्रन्थ गये सँग संग रेवासा को ।
करि पिंगल ग्रन्थ मिलाय सुभाय दियो श्रीराम सखे जू को ॥
लखि५ स्वप्न में शेष अरु अलि अग्र, उठे, पड़े पायँ दुहूं जन
को तन कम्प विलोकि हँसे दोउ मन्द, छमापन दान दिये
उनको ॥८॥ करि शक्ति६ सुधार चले गलता दोउ भाव भरे मुद
मोद पगे । लखि रास विलास महा मन मत्त फिरैं अन्तर वहि
रंग रँगे ॥ चितकूट में रामसखे कर वास श्री रामपुरी दिशि
आपु डगे७ । गुरु द्वारहिं पूजि सुआयसु पाय श्रीजानकि घाट में
आय लगे ॥९॥ रीवाँ पति८ संग पयोनिधि में मन मग्न सुने
वर्षात्सव पद । सेवा करि सुन्दर भाव गहे निज गेह गये लहि
आनँद हद ॥ जयमाल सुसंग्रह आनि चले सब सन्त मते हिय
की सम्पद । हनुमन्त कृपायसु मानस९ को बड़ व्यान१० चली
निगमागम बद ॥१०॥

॥ दोहा ॥

पांच११ षष्ठ वसु एक में, विजया दशमी भोर ॥
आनंद लहरी नामकी, टीका चली सुठोर ॥११॥

१-राजराघोदासजू के । २-राजराघो दास० ३-चित्रकूट ।
४-साकेत वास होने से । ५-रेवासके संगमा । ६-भेष और
रहन सहन । ७-लौट परे । ८—बिश्व नाथ सिंह जी । ९—
तुलसीकृत रामायण । १०-टीका ॥ ११-अठारह सै पैंसठ ।

सकल काण्ड एक संग में, टीका दई चलाय ॥
लखि-लखि सुनि-सुनि मनहिं गुनि, सन्त हृदय हर्षाय ॥१२॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा मणि माला ग्रन्थे सप्तमोऽङ्कः समाप्तः ॥७॥

॥ सोरठा ॥

प्रथम पूर्त्ति भयो बाल, पुनि बन काण्ड सुहायऊ ॥
किष्किन्धा तप काल, अवध वो सुन्दरकाण्ड तेहि ॥१॥
लंका काण्ढ सुचेत, तिन१ वसु वसु शशि अब्द में ॥
उत्तर जन हित हेत, तूर्२ वसू वसु इक भयो ॥२॥

घनाक्षरी

सन्त दास बृन्दा बनी मिथिला गमन मधि गुरु पद पूजन चिड़ान ठहराने हैं। रसिक सुभेष देखि जीवराम पूछो शील गुणन स्वभाव जानि रातहीं परानेइ हैं॥ त्राहि-त्राहि दीनता पुकारि कही बार-बार शेष संस्कार दै सुभाव समुझाने हैं। सब प्रिय प्यारी भाव गुरु रूपहीं लखात तन मन वचन सेवा में लपटाने हैं ॥३॥ जीवाराम शरण पे अवध बिहारी भेजे, चेला होय सेवा करि हिय सुख पाई है। रसिक अली की भक्ति भावना दृढ़ाई ग्रन्थ रचन सुहाई लखि हियाशीष पाई है॥ मिथिलाहू दास कियो साधक जीवनराम, बालमीक४ अंजनि-नंदन कहवाई है। टीका सुनि बिन्ध्य वासी राम के गुलाल आये, लखे, करि सत्त५बन्ध, भई मित्रताई है ॥४॥ कछु काल बसि गये, अवधूत सियाराम शरण सुशिष्य भे उपासना दृढ़ाई

१-सम्वत् १८८३। २-संवत् १८८४। ३-वात्सल्यके आवरण से। ४-हस्त लेख हनुमान गढ़ी से मंगाकर ५-प्रतिज्ञा।

है। जीवाराम सुहृद, सुभाव बड़े भोलन, तें कर जोरि गुरुहि सुनायो हिय जाई है ॥ आपु सरवज्ञ हो सिखाओ सुमृदंग मोहि रास मंच बैठि के बजाऊं मन भाई है॥ तिव्र अभिलाष को पुजाये बिन नाथ मन आगे न चलत अष्टयाम रुकि आई है ॥५॥ भोले मृदु सत्य भाव देखि मुसकायो दियो परितोष पायो ध्यान धारणा समायो है। गुरु के बचन परतीति नित मानि यत भावना स्वरूप गुरुदेव तहँ आयो हैं॥ मंगला चरण हीं में लखीं हैं रसिक अली नयन शयन चारुशीन हरषायो हैं। दृढ़ दिव्य दम्पति दयालुता दुआर दौर गुरुता गुरुहिं होय लघुता लखायो हैं ॥६॥ गुरुदेव ईश कृपा भावना सुसिद्ध देखि पूछी। सब जानी, बात लोक फैल गई है। युगुल१ प्रिया भे नाम, चन्द्रकला गुरु२ नाम, गुरु भक्ति भाव की उपासना ही लई है॥ रघुबीर शरण भयो हैं अज्ञाशीष शिष निज गुरु सेवा भाव उपदेश दई है। गुरुमय जगत उपासना लखात सब चहुं ओर ठोर-ठोर गुरु गति भई है॥७॥ दश३ पांच बरष के बाद चिड़ानहिं भेजि४ दियो५ रामसेवक शरण महन्वाई है। गुरु गादी भाव पूजा लेई के अबध आये रामदास शास्त्री जी सुसंग फल पाई है॥ मिथिला लतान लसे, हरिदास रोग ग्रसे कृपाशीष मुक्त मारकेश दुरियाई है। काशी के निवासी षट्-शास्त्री रघुनाथ दास मानस सुटीका देखि मानस पढ़ाई है ॥८॥ भट्ट जू वेदान्ती रामचन्द्र दशमेधबासी आयो सतसंग में सुशिष्य होय छायो हैं। टीका अन्त शिव लाल पाठक जू आप पढ़े, नित सतसंग गढ़े शिष्य में बढ़ायो है॥ आदि अन्त टीका को स्वरूप अनमोल जायो संत जन प्राण से पण्डित धन

१-जीवाराम जीका। २-फी करुणा सिन्धु जू का गुरु नाम भी स्पष्ट हुआ। ३-पन्द्रह वर्ष। ४-बरबश। ५-जाकर।

पायो है। भिक्षुक गुमानी रामसिया को विहारी दास युगुल प्रिया के भेजे आयो हरषायो है ॥८॥ सरयू सरित तीर बिच में मचान धीर तीन दिन वसि पाई मित्र कुशलाई है। मानस उछाह पाठ हवन आदि ब्रह्म भोज अष्टयाम नाम धुन सुख सरसाई है॥ भावना उदास देखि आई हैं युगुल प्रिया, दयाराम पौत्र आदि प्रीति मति भाई है। सबहिं पुजाई मित्र पत्रिका सुनाई परलोक हित निज यान नभ में लखाई है ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

सबके सब घबड़ाँय, श्री मुख सुनि परलोक गम ॥
सारत मंच ढिग जाय, घेर लियो चहुँ ओर तें ॥११॥
युगुल१ प्रिया स्नान, करि शिर तिलक शिंगार में ॥
दौड़ि पड़ी पछतान, अर्ध चन्द्र छवि भूल के ॥१२॥

इति श्री दास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा मणिमाला ग्रन्थेऽष्ठमाऽङ्कः समाप्तः ॥८॥

❀ दोहा ❀

ओषम घट जल मीन जिमि, याहिं बचन पयोद ॥ महाराज मुखचन्द को, निरखतहूँ नहिं मोद ॥ १ ॥ बरु चकोर पावक भरे, अण्ड समुद्र समाय ॥ पै जल प्रेमी मीन को, नाहिंन और सहाय ॥ २ ॥

❀ सवैया ❀

करुणा दृग ते सब ओर लखे ढिग राम सेवक्क बुलाय लये। कहे देवतरु सम सन्त सुजेवम हस्त वरद सुशीश फये ॥ नित

१–अभी आये हैं और आज्ञा पाकर तीन दिन के परिश्रम को स्नान द्वारा दूर किये हैं।

मानस ग्रन्थ कथा रस संग अली बड़ अग्र सुभाव चर्यो। गुरु राम प्रसाद रची निज १पत्रि शुभायनु त्रैविध भावमये ॥ ३॥ नृप राघव दास दिशा दिशि देखि बुलाय कहे सुनु धीर धरे। यह देह सुजीर्ण बिलोकहु तो जग में फटि फाटि के काह जरे२ ॥ अब गुप्त निवास को लेन चहो घरराव न नित्त मिलोई करे।

करु जानकि घाट में वास भजन्न मनन्न सुसेवन सन्त तरे ॥ ४ ॥ रसिका अलि के शिर हाथ दिये समुझाय कहे धरु धीर हिये। रसिकन्न सुमौलि श्री अग्र अली रस भाव विभूषित ग्रन्थ लिये ॥ मिथिला रस भावुक सन्तन के हित जाय बसो कछु काल दिये। तीरथ प्रति गाँव गँवारन में सुप्रचारहु भाव शिंगार किये ॥ ५ ॥ झट३ युगल प्रिया दिशि देखि विरह पावक उड़ भास बुझाने लगे। दृल शन सुझाय सुमानस४ भाव अली निज रुप लखाय ठगे ॥ गुरु भाव ५यहा जग बीच प्रसिद्ध, यही हृदि भालहि सुशिष्य-रँगे। इन रसिकन गाथ७ सँभारि रचो जिह भावि रसिकन सन्त जगे ॥ ६ ॥ कछु काल यहाँ कछु काल वहाँ जिय चाहे जहाँ तहँवा रहि के। नित मानस पूजन नाम उचारण सन्त समागमही गहि के ॥ कलिकाल सुखी विमुखी हरि सम्बल क्रूड़ वचन सहसा सहिके। मम आशिष रंचहु अंतर ना परिहहि मुद मोद सदा लहि के ॥ ६ ॥ चहुँ ओर निहारि कहे हँसि मानहु मोर यही उपदेश अहै। कलिकाल अधी जन पावन के हित एकहिं नाम त्रिताप दहै ॥ जग प्रेम छुठै, युग प्रीति लटै, सुख भोगि के, जाय समीप रहै। छवि माधुरि पान निरन्तर में मन मग्न महा सुख श्वांस गहै ॥ ८ ॥ सब छांड़हु शोच नहीं

---

१ धर्म शिक्षा पत्री। २-फटे फटे कपड़ों को कहाँ तक जोड़ा जायगा ३-बिरहानल से संतप्त देख कर। ४-मृदंग शिक्षण। ५-आशीर्वाद है ६-वर्त्तमान तिलक। ७-चरित्र। ८-जागृति हो।

अब काल सुना बहु नाम चहूं दिशि ते। मुँदि आँखि महाधुनि नाम सुने, भय तेज प्रकाश महारव ते ॥ तेहिते सब अँखिया बन्द भई सब ठाढ़े भने हैं जहाँ तहँ ते। गहि चारुशिला कर, माल पिन्हाइ. गिरे बहु फूल विमानन ते ॥ ६ ॥ जय जय धुनि गगन दिशाननु में सुनि आँखि खुले सब फूल दवे। चख फूल लखे, कर फूल गहे, मुखहूँ पर फूलहिं फूल जबे ॥ ग्रीषम कर भोग शिशिर ऋतु में रवि अस्त दुखी दिन मध्य तवे। करुणा निधि गुरु सौभाग्य सूर्य अस्ताचल शैन करी है अवे ॥ १० ॥

❀ दोहा ❀

माघ शुक्ल नवमी तिथी, वसु वसु वसु शीश शाल ॥ सुमन शेज विश्राम लियो, मध्य दिवस रवि माल ॥११॥ सन्त रसिक करिहहिं दया, लिखि निज मति अनुसार ॥ "रास रसिक" पढ़िहहिं सुनहिं, करुणा माल सुधार ॥ १२ ॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री
करुणा मणि माला—ग्रन्थे
नवमोऽङ्कः समाप्तः ॥६॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

❀ अथ श्री करुणा कलित कोषः प्रारम्भः ❀

❀ रोला ❀

सुमिरि पिया पिय चारु शिला पद कंज मनाऊं।
अब अली पद रज सुधारि हिय नयन लगाऊं ॥ १ ॥
सदगुरु चरित पुनीत सरित बर मनहिं नहाई।
सबहिं पुजाई आश होइ मो मन सुखदाई ॥ २ ॥
तोरण केतु पताक कलश गृह गृह सजवाई।
जातक नेग उछाह बहुत करुणा सिराई ॥ ३ ॥

कुन्द इन्दु वर गोर गात छवि सबहिं लुभाई ।
बाल केलि मुसुकात नजर टोना लगि आई ॥ ४ ॥
फलाहारि पयहारि सन्त दोउ प्रगट लखायो ।
विहँसि मन्त्र कर फेरि नजर वेगिहि दुरियायो ॥ ५ ॥
राम नाम धनु बाण चन्द्रिका मुद्रिक चारी ।
भाल लगत नहिं होय नेकहूँ नजर दुखारी ॥ ६ ॥
नेग पाय गुरू शिष्य १दिये आशीष सुहाई ।
अंकित भाल विलोकि महा छवि निधि उमड़ाई ॥ ७ ॥
जबहिं सन्त २कछु आप विलोकत अति अनुरागे ।
ता दिन ते ३सित पाख चन्द जिमि बाढ़न लागे ॥ ८ ॥
राम नाम लिखि भाल पाठ नित मानस केरा ।
दम्पति जीवन सन्त संगकर सुखद बसेरा ॥ ९ ॥
मानस पाठ नवाह अन्त अंजनि सुत ४छाया ।
श्री प्रसाद होय मिलउ काल कछु अन्तर लाया ॥ १० ॥
कोष काज लखि त्यागि पहुँचि हनुमन्त किला को ।
श्री रघुनाथ जू आप सुभायसु चारु शिला को ॥ ११ ॥
श्री प्रसाद ५फलहारि पास लहि मंत्र उदेशा ।
विहँसि विंदु श्री उर्ध पुण्ड युग कंठि सुदेशा ॥ १२ ॥
मुद्रित भाल विलोकि दूरि ते षट् रिपु भागे ।
क्षमा दया सौशील्य आदि गुण हिय में जागे ॥ १३ ॥
रैवासा लखि ग्रंथ चरित आवेश में आई ।
रहन मगन उन्मत्त दशा नित सुधि बिसराई ॥ १४ ॥
तिलकासन भ्रम पाय लगे अवलोकन ग्रंथा ।

१-और चले गये । २-कोई जमात । ३-शुक्ल पक्ष । ४-अप्रत्यक्ष होते हुए भी आशीर्वाद दे रहे हैं । ५-यही बालपन में मुद्रिका आदि लगा आये है ।

बिहँसत ही हरि १कहेउ यही प्रेमी कर पंथा ॥ १५ ॥
ऊर्ध पुण्ड्र पद चिह्न मध्य श्री सहित शिंगार।
आसन दोउ कर हमहिं जानि जनि करहु विचारा ॥ १६ ॥
युगल सुसेवन काज आजुलों रहे प्रतच्छा।
अवते रहिहौं गुप्त रूप यह प्रभु की इच्छा ॥ १७ ॥
रसिक भाव हनुमन्त नाम अब ते छिपि जाई।
श्रीप्रसाद श्रीचारू शिला मम नाम सुहाई ॥ १८ ॥
गुप्तासन कर तिकल यही रसिकन पहिचाना।
ह्वै हैं जग विख्यात आशिषा मोर निदाना ॥ १९ ॥
२पौहारी निज रूप प्रगट मुह आशिष दीन्हा।
जानी ३गुरु, इक शिष्य भेजि मुदस्वागत कीन्हा ॥ २०॥
वन्धुसहित गलता विलोकि कल केलि कद म्विनि।
जानकि गीत इसाल चरित छविमाल सुकन्दिनि ॥ २१॥
अवध आय गुरुदेव ते पायो तिलक४ विभासा।
शिष्य रु साधक शिष्य मांहि कियो जाहि विकासा ॥ २२ ॥
रसिक रीति उपदेश कथा नित होत सुहाई।
रस अभेद महँ भेद नेक सोइ गुण गरुआई ॥ २३ ॥
अग्रदेव कर मारतंड बल्मीक प्रमाना।
लखि लखि मन गुनि होउ सुदृढ़ पिय रसिक सुजाना ॥ २४ ॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा कलित कोष
ग्रन्थे प्रथमो व्यूहः समाप्तः ॥ १ ॥

१--हनुमानजी २-श्री कृष्णदासजी। ३-भावना में श्री दीन वन्धु जी। ४-इस ग्रन्थ में उपासना के स्थान भेदसे तिलक का भेम वर्णन है

आचारी लखि सीथ प्रसाद प्रभाव विलच्छन ।
रसिक रीलि कर मन्त्र यजन सुनि डगे ततच्छन ॥ १ ॥
पंचदेव ते विष्णु विष्णु ते बड़ नारायन ।
नारायण ते बासुदेव बड़ कृष्ण कृपायन ॥ २ ॥
सवते राघव तहूं राम यह सुन्दर नामा ।
सीता सहित न एक दोष बहु बिधि परिणामा ॥ ३ ॥
यही नाम यहि मन्त्र उपासक के हितकारी ।
ब्रह्मादिक सब देव निरन्तर जपत सँभारी ॥ ४ ॥
कृष्ण आदि अवतार यही [1]युग मन्त्र उपासक ।
नारदादि सनकादि चिरंजीवी लोमश तक ॥ ५ ॥
जैसे गुरु में ईश बुद्धि तस मन्त्रहिं मानो ।
गुरुवर मन्त्र में तीन भेद नित हिय में आनो ॥ ६ ॥
मन्त्र गुरु व उपासन गुरु आदेश गुरु को ।
श्री हनुमत श्री चारु शिला अलि इन दोऊ को ॥ ७ ॥
श्री गुरु हनुमत चारुशिला सीता अरु रघुवर ।
पंच मन्त्र ते रसिकन हिल सिद्धान्त अधिकतर ॥ ८ ॥
इन्ह विनु नहिं सियनाह तुष्ट कबहूं काहू पर ।
भव सागर दुख [2]तरनिहार जपिहहिं नित हिय धर ॥ ९ ॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा कलित
कोष ग्रन्थे द्वितीयो व्यूहः समाप्तः ॥ २ ॥

दास आदि सब भाव कठिन अपनो अपनो बल ।
इष्टदेव की कृपा आश नित शरण छिनक पल ॥ १ ॥

१-युगल नाम-सीताराम और जानकी ठाकुर तथा राम ठकुर मंत्र । २-भव सागर से तर कर नित्य स्वरूप सेवा में जाने वाले ।

शरण सुलभ यहि भाँति लखहु स्वामी आचारी।
आनन्द उर लहरात भयउ तेहि छनहिं सुखारी ॥ २ ॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा कलित कोठा ग्रन्थे तृतीयो व्यूहः समाप्तः ॥ ३ ॥

राम ते सब अवतार धाम ते धामन जायो ।
नाम ते सबरो नाम चरित ते चरित सुहायो ॥ १ ॥
धनुष बाण ते शिव त्रिशूल हरि चक्र भयो हैं ।
राम अंश अवतार शम्भु हरि हाथ लयो है ॥ २ ॥
राम उपासक हेतु बाण धनु परम प्रधाना ।
विष्णु उपासक चक्र यही श्रुति शास्त्र बखाना ॥ ३ ॥
इष्ट भक्त गुरु भक्त अमर उपदेश को पायो ।
प्रीति पयोधि अपार कमल बनि सबहिं सुहायो ॥ ४ ॥
श्री करुणा मणि माल पहिरि उर "रास रसिक" जन ।
सकल व्यूह करि पार बाढ़ हैं करुण कोष घन ॥ ५ ॥

इति श्री रास रसिक शरण विरचिते श्री करुणा कलित कोष ग्रन्थे चतुर्थो व्यूहः समाप्त ॥ ४ ॥

* समाप्तोऽयं ग्रन्थः *

१-साधक शिष्य बने । २-रसिक अली जी । ३- युगल प्रिया जी ।

❀ प्रार्थना ❀

ओकरुणासिन्धु की करुणा पै निशि दिन जाऊं बलिहारी । टेक

अमिय उपदेश से छिन में छुड़ायो जगत भ्रम सारी ।
बसायो सरयु सरि तट मोर नित रसिकन को जइँ भारी ॥ १ ॥

तिलक शशि बिंदु सियजू को युगलवर मन्त्र रसकारी ।
अवारज चारुणोजा सो जो सब सखियन में सरदारी ॥ २ ॥

दया दृग नित्य सर्वेश्वरि मिलावत पोय अरु प्यारी ।
युगल प्रिय केलि रस सागर मगन सद्गुरु को आभारी ॥ ३ ॥

पं० भगवानदासजी शास्त्री के प्रबन्ध से—
आनन्द प्रेस, अयोध्याजी में मुद्रित।